4

# हिंदी साहित्य ज्ञानकोश


प्रधान संपादक

**शंभुनाथ**

संपादक मंडल

**राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख**
**अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह**
**अवधेश प्रसाद सिंह**

भाषा संपादक

**राजकिशोर**

संयोजन

**कुसुम खेमानी**

5

# हिंदी साहित्य ज्ञानकोश


प्रधान संपादक

**शंभुनाथ**

संपादक मंडल

**राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख**
**अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह**
**अवधेश प्रसाद सिंह**

भाषा संपादक

**राजकिशोर**

संयोजन

**कुसुम खेमानी**

7

# हिंदी साहित्य ज्ञानकोश


प्रधान संपादक

**शंभुनाथ**

संपादक मंडल

**राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख**
**अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह**
**अवधेश प्रसाद सिंह**

भाषा संपादक

**राजकिशोर**

संयोजन

**कुसुम खेमानी**

एकमात्र वितरक

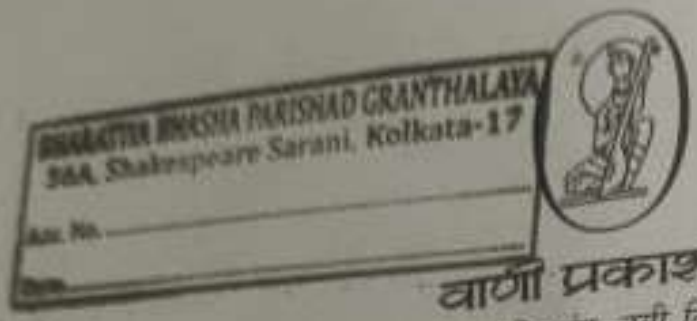


वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कोठी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

HINDI SAHITYA JNANKOSH-5
*Chief Editor* : Shambhunath

ISBN : 978-81-940882-0-2
Kosh

© 2019 भारतीय भाषा परिषद

प्रथम संस्करण

सात खंडों का सम्पूर्ण सेट : ₹5000

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सन्मार्ग प्र.लि., कोलकाता में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1423 | [illegible] : [illegible] | 2397 | 1459 | बी टी रणदिवे | 2461 |
| 1424 | बहुराष्ट्रीय कंपनी | 2398 | 1460 | बीट पीढ़ी | 2465 |
| 1425 | बहुलतावाद | 2400 | 1461 | [illegible] विचारधारा | 2466 |
| 1426 | [illegible] | 2401 | 1462 | बीजू | 2468 |
| 1427 | [illegible] | 2401 | 1463 | [illegible] | 2468 |
| 1428 | बांग्ला | 2404 | 1464 | बुक क्लब | 2470 |
| 1429 | बांग्ला नवजागरण | 2414 | 1465 | बुजुर्ग और मानवाधिकार | 2472 |
| 1430 | बाजार | 2417 | 1466 | बुद्धि | 2474 |
| 1431 | [illegible] | 2418 | 1467 | बुद्धिकेंद्रिकता | 2476 |
| 1432 | बाजार की संस्कृति | 2419 | 1468 | बुद्धिजीवी | 2477 |
| 1433 | बाजारवाद | 2420 | 1469 | बुल्ले शाह | 2478 |
| 1434 | बाणभट्ट | 2421 | 1470 | बृहत्कथा और उसकी परंपरा | 2479 |
| 1435 | [illegible] | 2422 | 1471 | बृहस्पति | 2482 |
| 1436 | [illegible] | 2423 | 1472 | बेंजामिन ली व्होर्फ | 2483 |
| 1437 | बादल सरकार | 2424 | 1473 | बेगम अख्तर | 2484 |
| 1438 | बाबा | 2425 | 1474 | बेट्टी फ्रीडन | 2486 |
| 1439 | बाबरनामा | 2426 | 1475 | बेरोजगारी | 2487 |
| 1440 | बाबूराम सक्सेना | 2427 | 1476 | बेस्टसेलर | 2488 |
| 1441 | बाबूराव विष्णु पराड़कर | 2427 | 1477 | बैजू बावरा | 2490 |
| 1442 | बारहमासा | 2429 | 1478 | बोडो | 2490 |
| 1443 | बाल गंगाधर तिलक | 2430 | 1479 | बोध | 2495 |
| 1444 | बाल गीत | 2433 | 1480 | बोलियों का भविष्य | 2495 |
| 1445 | बाल श्रम | 2435 | 1481 | बौद्ध कला | 2497 |
| 1446 | बाल साहित्य | 2436 | 1482 | बौद्ध दर्शन | 2499 |
| 1447 | बाल साहित्य : नया दौर | 2443 | 1483 | बौद्ध धर्म और दलित | 2504 |
| 1448 | बालामणि अम्मा | 2445 | 1484 | बौद्ध धर्म के यान | 2505 |
| 1449 | बालि | 2445 | 1485 | बौद्धिक संपदा अधिकार | 2505 |
| 1450 | बासुदेव बलवंत फड़के | 2447 | 1486 | ब्रज लोकगीत | 2509 |
| 1451 | बिंदुसार | 2448 | 1487 | ब्रजभाषा | 2510 |
| 1452 | बिंब | 2448 | 1488 | ब्रह्मगुप्त | 2512 |
| 1453 | बिदेसिया | 2450 | 1489 | ब्रह्मचर्य | 2513 |
| 1454 | बिरजू महाराज | 2451 | 1490 | ब्रह्मा | 2514 |
| 1455 | बिरसा मुंडा | 2452 | 1491 | ब्रांड रणनीति | 2515 |
| 1456 | बिरहा | 2453 | 1492 | ब्रांड संस्कृति | 2517 |
| 1457 | बिस्मिल्लाह खान | 2454 | 1493 | ब्राह्म समाज | 2518 |
| 1458 | बिहार | 2455 | 1494 | ब्राह्मण ग्रंथ परंपरा | 2519 |
| | | | 1495 | ब्राह्मी लिपि | 2521 |

और इसी जनवादी का ... प्रतीकों और उनका के ... के ऊपर विरोध किया। वे कहते थे, अमेरिका ... के विरुद्ध एक बड़ी और स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह मनुष्य का विनाशकारी संगीत है, जो ... व्यवस्था में मनुष्य के मस्तिष्क और आत्मा ... के विरुद्ध पैदा हुआ है। अमेरिका के कलाकार [illegible] उसके सामने प्रतिवाद [illegible] है जो उसे धकेल दे रहा है। [illegible] आक्रमण है। [illegible] आधुनिकता [illegible] प्रतीकों [illegible] पीढ़ी को [illegible] थी कि [illegible] के साथ [illegible] रही थी [illegible] चेतना [illegible] हो गई है, हमारी [illegible] की हत्या की जा रही है।

शंभुनाथ

अधिक जानकारी के लिए : 1. The Beat Generation : The tumultuous' 50s movement and its impact on today : Bruce Cook, 1971, 2. Woman of the Beat Generation : Brenda Knight, 2010

## बीहू

असम प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार बीहू है। वर्ष भर में तीन बीहू मनाए जाते हैं—माघ बीहू (मध्य जनवरी), बोहाग बीहू (मध्य अप्रैल) तथा काति या कंगाली बीहू (मध्य अक्टूबर)। इनमें सबसे महत्वपूर्ण बोहाग है, जिससे नए वर्ष की शुरुआत मानी जाती है। साधारणतः सात दिनों तक यह उत्सव और उल्लास चलता है। इस अवसर पर किए जाने वाले जातीय नृत्य को बीहू कहते हैं। इस समय किसान धान रोपने की तैयारी करते हैं। स्त्रियां चावल और नारियल से पिठ्ठा तथा लड्डू बनाती हैं, जो ऋतु का वास्तविक स्वाद देता है। मिथिलांचल, बंगाल, मणिपुर, नेपाल, उड़ीसा, पंजाब, केरल, तमिलनाडु में भी भिन्न नाम से इसी समय नव वर्ष मनाया जाता है।

कंगाली बीहू के समय तक अन्न का भंडार समाप्त हो जाता है। इसी कारण इसे कंगाली बीहू भी कहते हैं। इस समय शांति और संतोष का वातावरण



बीहू

होता है। लोग तुलसी के पेड़, घर के द्वार [illegible] में मिट्टी के दिए (माकी) जलाते हैं तथा [illegible] में खड़े होकर अच्छी फसल के लिए अनुष्ठान [illegible] है। माघ बीहू भोगाली अर्थात भोजन और [illegible] अवसर है। यह धान कटाई का समाप्ति [illegible] मास के अंतिम दिन (उरुका) लोग आग जलाकर उसकी पूजा करते हैं, सारी रात ढोल बजाते हैं [illegible] मिठाइयां तथा बधाइयां बांटते हैं। बीहू [illegible] लोक संस्कृति का मुख्य अंग है जिसे असम से बाहर रहने वाले असमिया भी मनाते हैं और इस तरह यह देश-विदेश तक प्रचलित है। 'लंदन बीहू कमिटी' इसका उदाहरण है।

प्रीति [illegible]

## बुंदेली

बुंदेली पश्चिमी हिंदी की एक बोली है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप से माना जाता है। यह झांसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, सागर, टीकमगढ़, छतरपुर, छिंदवाड़ा, ओरछा, नरसिंहपुर, सिवनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप आगरा, दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट, ना[illegible] आदि में भी प्रचलित हैं। बुंदेली का क्षेत्र विस्तृत [illegible] पँवारी, लोधांती, खटोला, भदावरी, सहेरिया [illegible] किनारकी इसकी प्रमुख उपबोलियां हैं। 2001 ई. की जनगणना के अनुसार, इसके बोलने वालों की संख्या 3,072,147 है।

1270 [illegible] 2171
1271 [illegible] 2172
1272 [illegible] 2177
1273 [illegible] 2179
1274 [illegible] 2180
1275 [illegible] 2181
1276 [illegible] 2182
1277 [illegible] 2183
1278 [illegible] 2183
1279 [illegible] 2185
1280 [illegible] 2186
1281 [illegible] 2187
1282 [illegible] 2187
1283 [illegible] 2188
1284 [illegible] 2189
1285 [illegible] 2191
1286 [illegible] 2192
1287 [illegible] 2193
1288 [illegible] 2194
1289 [illegible] 2195
1290 पॉप संगीत 2196
1291 पॉप संस्कृति 2197
1292 पॉल एंथोनी सैम्युलसन 2198
1293 पॉल दे मान 2199
1294 पॉल विरिलियो 2200
1295 पॉलिसिस्टम : अनुवाद सिद्धांत 2001
1296 पॉलो फ्रेरे 2204
1297 पोलान 2206
1298 पोर्नोग्राफी 2207
1299 पोस्टर कविता 2208
1300 पौराणिक पशु-पक्षी 2209
1301 प्रकृतवाद 2210
1302 प्रकृति और पुरुष 2211
1303 प्रकृति पूजा 2212
1304 प्रकृति, पर्यावरण और कविता 2213
1305 [illegible]
1306 प्रगतिवाद
1307 प्रगतिशील काव्य 2219
1308 प्रगतिशील लेखक संघ 2222
1309 प्रगीत 2225
1310 प्रच्छन्न लेखक 2226
1311 [illegible] 2227
1312 [illegible] 2227
1313 प्रति-औपनिवेशिकता 2228
1314 प्रतिक्रियावाद 2230
1315 प्रतिनिधित्व 2231
1316 प्रतिबंधित साहित्य 2232
1317 प्रतिबद्धता 2234
1318 प्रतिभा 2236
1319 प्रतिरोध 2238
1320 प्रतिरोध का साहित्य 2240
1321 प्रति-विमर्श 2242
1322 प्रति-संस्कृति 2243
1323 प्रतीक 2244
1324 प्रतीक अपहरण 2246
1325 प्रतीकवाद 2246
1326 प्रतीत्यसमुत्पाद 2247
1327 प्रत्यक्षबोध 2249
1328 प्रत्यक्षवाद 2250
1329 प्रत्यभिज्ञा 2251
1330 प्रथम विश्वयुद्ध 2253
1331 प्रदर्शनकारी उपभोक्तावाद 2255
1332 प्रद्युम्न 2256
1333 प्रपत्ति 2257
1334 प्रपद्यवाद 2257
1335 प्रबंध काव्य 2258
1336 प्रभाव उद्विग्नता 2259
1337 प्रभाववाद 2260
1338 प्रभावान्विति 2262
1339 प्रभुत्व 2263

पापड़ आदि के सुस्वादु भोजन का सिलसिला शुरू हो जाता है। इसके साथ नीम के पत्ते भी भोजन में होते हैं। ये याद दिलाते हैं कि जिंदगी में कड़वाहट भी एक सच्चाई है। पोंगल की रात कार्निवाल से सजी होती है। लाउडस्पीकर पर भजन बजते हैं। उस दिन मृत्यु शुभ मानी जाती है, क्योंकि महाभारत के भीष्म पितामह ने शरशय्या पर लंबी प्रतीक्षा के बाद इसी दिन प्राण त्यागा था। इसी दिन देवता लंबी निद्रा के बाद जागते हैं।

पोंगल के तीसरे दिन उन पशुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है, जो निःस्वार्थ भाव से मनुष्य जाति के लिए खेतों में कार्य करते आए हैं। गायों को नहलाया जाता है, उनकी सींगें रंगी जाती हैं और उन्हें सजाया जाता है। फिर उनकी आरती करके उन्हें पोंगल का प्रसाद खाने को दिया जाता है। इस अवसर पर जिल्लिकट्टू का खेल होता है जो सांड को काबू में करने का खतरनाक खेल है। इससे संबंधित पौराणिक कथा यह है कि शिव ने अपने बैल बसव को धरती पर भेज कर कहा था कि वह जाकर लोगों को बताए कि वे प्रतिदिन तेल से मालिश करके नहाएं और महीने में एक दिन भोजन करें। बैल ने भूल से उलटा कह दिया, एक दिन तेल से मालिश करके नहाएं और रोज भोजन करें। इस पर शिव ने बैल को शाप दिया कि वह धरती पर ही रह जाए और खेत जोते, क्योंकि तभी लोगों को अधिक अन्न मिलेगा। चौथे दिन, कानुम पोंगल के अवसर पर लोग अपने मित्रों, संबंधियों और पड़ोसियों को बधाइयां और उपहार देते हैं। वे खेतों और मंदिर में आराधना करते हैं।

खासकर दक्षिण भारत के सभी बड़े पर्व किसी न किसी रूप में कृषि की नई फसल से जुड़े हैं। इन पर अब उत्तर-औद्योगिक सभ्यता के फैशन के रंग भी चढ़ते जा रहे हैं।

प्रीति सिंघी

## पोर्नोग्राफी

जो लेखन और चित्र सिर्फ यौन उत्तेजना पैदा करें, उसे पोर्नोग्राफी (Pornography) कहा जाता है। 'पोर्न' ग्रीक शब्द Porneia से बना है जिसका अर्थ है वेश्यागमन या गणिका। दुनिया की हर सभ्यता में यह अवधारणा अति प्राचीन रही है। यह व्यापार प्राचीन भले ही हो, पर पोर्नोग्राफी का विस्तार आधुनिक युग में हुआ। अमेरिका में इसकी शुरुआत उसके जन्म से ही हो चुकी थी, पर पोर्न उद्योग में उछाल वहीं उन्नत संचार क्रांति की देन है। जाहिर है, इसका सबसे बड़ा केंद्र अमेरिका ही है। अब पोर्नोग्राफी का मुद्रित या मुद्रित पोर्नोग्राफिक साहित्य से आगे बढ़कर इंटरनेट पर यू-ट्यूब तथा पोर्न साइटों पर 5 से 30 मिनट तक की फिल्मों के रूप में अधिक लोगों तक पहुंच रही है। ऐसी फिल्में प्रति महीने हजारों की संख्या में बनती हैं। इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों में करीब चालीस प्रतिशत से अधिक वयस्क लोग पोर्न फिल्में देखते हैं। यह पोर्नोग्राफी की बढ़ी लोकप्रियता नहीं, बल्कि पोर्न आक्रमण है।

'इरोटिका' और 'पोर्नोग्राफी' [illegible] प्राचीनकाल से कला-साहित्य [illegible] स्थापत्य में कामुक चित्र [illegible] पोर्न नहीं हैं। पोर्न फिल्में [illegible] कुछ अधिक। ये [illegible] हैं। पोर्न का पहले [illegible] अर्पित यौन हाव-भाव [illegible] (ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, [illegible]) विस्तार हो गया—कामुक [illegible] वाले किसी भी किस्म के यौन हाव-भाव और यौन क्रिया के दृश्य, भले वे पशुओं के हों या खुद अपने शौक से बनाए गए हों। पोर्न फिल्में या छवियां कामुकता को इस तरह खोलती हैं कि उसके रहस्य का आंतरिक आनंद मिट जाता है और उसका स्थान हिंसा और विकृत कामुक तृप्ति ले लेती है। पोर्नोग्राफी मर्द और स्त्री, दोनों के बारे में गलत धारणाएं निर्मित करती है, यह खासकर स्त्री के प्रति अमानवीय दृष्टि का

2604 हिंदी के राजकीय संस्थान 4454
2605 हिंदी के विदेशी विद्वान 4458
2606 हिंदी जाति 4461
2607 हिंदी जागरण 4463
2608 हिंदी नवजागरण 4468
2609 हिंदी नाटक 4469
2610 हिंदी पत्रकारिता 4474
(आजादी के बाद)
2611 हिंदी पत्रकारिता 4478
(राष्ट्रीय आंदोलन का दौर)
2612 हिंदी पत्रिकाएँ 4482
2613 हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम 4483
2614 हिंदी प्रांत पैटर्न 4485
2615 हिंदी फिल्म गायकी 4486
2616 हिंदी भाषा प्रौद्योगिकी 4491
2617 हिंदी में उर्दू साहित्य 4493
2618 हिंदी में साक्षात्कार विधा 4495
2619 हिंदी वर्तनी एवं ध्वनियों 4497
का मानकीकरण
2620 हिंदी विज्ञान लेखन 4499
2621 हिंदी वेब साहित्य 4502
2622 हिंदी संदर्भ पुस्तकालय 4502
2623 हिंदी समय 4503
(हिंदी समय डॉट कॉम)
2624 हिंदी साहित्य सम्मेलन 4503
2625 हिंदी साहित्येतिहास : काल 4505
विभाजन और नामकरण
2626 हिंदी साहित्येतिहास लेखन 4509
2627 हिंदी सिनेमा 4514
2628 हिंदी सिनेमा : साहित्यिक गीत 4521
2629 हिंदी सिनेमा की भाषा 4525
2630 हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी 4527
2631 हिंदी-उर्दू विवाद 4532
2632 हिंदीतर शिक्षार्थी : 4536
हिंदी शिक्षण
2633 हिंदुस्तानी
2634 हिंदुस्तानी-अंग्रेजी कोश 4538
2635 हिंदुस्तानी अकादेमी 4548
2636 हिंदुस्तानी संगीत 4549
2637 हिंदू धर्म 4550
2638 हिंदू धर्म और मानवाधिकार 4553
2639 हिंसा 4556
2640 हिजड़ा 4560
2641 हिडिंबा 4562
2642 हितोपदेश 4563
2643 हिपोलित अडोल्फ तेन 4564
2644 हिमाचल प्रदेश 4565
2645 हिरण्यकशिपु 4566
2646 हिरण्याक्ष 4573
2647 हीनता ग्रंथि 4574
2648 हीनयान 4575
2649 हीरा डोम 4575
2650 हुमायूँ 4577
2651 हुमायूँनामा 4577
2652 हेनरी थिरौक्स 4578
2653 हेनरी डेविड थोरो 4579
2654 हेनरी लुइस विवियन डिरोजियो 4580
2655 हेमचंद्र 4581
2656 हेमचंद्र जरुआ 4583
2657 होमी जे भाभा 4584
2658 होरेस 4585
2659 होली 4586
2660 ह्वेनत्सांग 4587
4588

...लोकप्रियता के लिए प्रयास करने और श्रेष्ठतम आलोचना को आकर्षित करने के लिए सलाह देते हैं। इस पुस्तक को उसके आलोचना सिद्धांतों के पश्चिमी परंपरा पर प्रभाव के संदर्भ में अरस्तू की 'पोएटिक्स' के बाद दूसरा प्रमुख ग्रंथ माना जाता है। इसमें उन्होंने औचित्य सिद्धांत की प्रस्तावना की है। उन्होंने लिखा था, 'यदि कोई चित्रकार मनुष्य के सिर में घोड़े की गर्दन जोड़ दे, सभी प्रकार के पशुओं के अंगों को इकट्ठा कर उनमें किस्म-किस्म के पंख लगा दे और ऊपरी हिस्से में सुंदर नारी का रूप अंकित कर निचले हिस्से में भद्दी मछली बना दे तो मित्रो! क्या इन चीजों को देखकर आप अपनी हंसी रोक पाएंगे?'

होरेस ने कविता पर कुछ टिप्पणियां की है। 'कवि में इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह प्रकाश से धुआं उत्पन्न न कर धुएं से प्रकाश पैदा करे।' होरेस ने कविता में औचित्य पर जोर देते हुए कहा, 'जिस तरह अच्छी दावत में बेसुरा संगीत या दुर्गंध अच्छी नहीं लगती, उसी तरह कविता यदि अपने गुणों से हमें आकर्षित नहीं कर सके तो उत्तम की जगह अधम की होती है।' उनका मानना था, 'कविता में कोई एक सूत्र संक्षिप्त रूप में होना चाहिए। कथानक सत्य के नजदीक होना चाहिए। बुजुर्ग नागरिकों को शिक्षाविहीन नाटक पसंद नहीं आते, गर्म मिजाज के लोगों को नीरस और शिथिल कविता अच्छी नहीं लगती। वही रचना सभी को अच्छी लग सकती है जिसमें आनंद और उपदेश दोनों का समन्वय हो।' उन्होंने यह भी सलाह दी कि परंपरागत प्रसिद्ध चरित्र परिचित होते हैं। अतः उनके स्वभावगत वैशिष्ट्य का ध्यान रखते हुए उनसे संबंधित कथानक सुसंगत होने चाहिए।' वे निपुण संयोजन को ही मौलिकता मानते थे। उन्होंने इतिहासबोध को पाठकीय संवेदना से जोड़ा।

होरेस ने कविता रचना की दैवीय प्रेरणा (प्लेटो) वाले सिद्धांत को बदल कर 'आंतरिक प्रेरणा' दिया। वही रचना श्रेष्ठ है जो युग की जरूरत हो। होरेस ने यह भी लिखा है कि तात्कालिक अनुभूतियां पक जाएं, तब उन पर रचना लिखी जानी चाहिए। अनुभूति और इसके प्रकाशन के बीच अंतराल जरूरी है। इसके अलावा वे कवि प्रतिभा के अनुरूप काव्य विषय चुनने की सलाह देते हैं। होरेस ने अपना साहित्यिक सिद्धांत व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत नहीं किया, पर उनके कई कथन उनके 'औचित्य सिद्धांत' की आधारशिला बने।

होरेस का प्रभाव कई पीढ़ियों के पश्चिमी कवियों और आलोचकों पर पड़ा था, जिनमें बेन जान्सन, एलेक्जेंडर पोप, लॉर्ड टेनिसन, डब्लू एच ऑडन, लुई मेकनीज और रॉबर्ट फ्रॉस्ट शामिल हैं।

**किरण सिंह, शशांक शुक्ल**

## होली

होली वसंत ऋतु के फाल्गुन महीने (फरवरी या मार्च) की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला, हिंदुओं का एक सार्वजनिक पर्व है। दोल, फगुआ, शिमगा, उक्कुलि आदि इसके विविध नाम हैं। इस उत्सव का संबंध धर्मशास्त्रों से न होकर लोक परंपराओं से है। पारंपरिक रूप से यह दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन होलिका दहन होता है। होलिका राक्षस हिरण्यकश्यप की बहन थी जिसे वरदान था कि वह आग में जल नहीं सकती। अपने भाई के कहने पर वह नारायण भक्त प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठी थी। वह खुद जल गई, पर प्रह्लाद बच गया, जो सत्य का प्रतीक माना गया। कर्नाटक और तेलंगाना में होलिका की जगह कामदेव का दहन होता है और दूसरे दिन वह वसंतोत्सव के रूप में फिर जी उठता है।

होलिका दहन में सार्वजनिक चौराहों पर लोग पुरानी जीर्ण-शीर्ण चीजें, लकड़ियां और उपले सजा कर आज भी होलिका दहन करते हैं। जिन उपलों में छेद हो, ऐसे भरभोलिए की माला बनाकर जलाने की प्रथा है। इसे बीमारियों से युद्ध के रूप में भी देखा जाता है। इस आग में नई फसल की बालियां,